INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:7(1), July 2021
Digital certificate of publication:
Article Received: 4th July
Publication Date:10th July 2021
DOI: http://ijmer.in.doi./2021/10.07.06

जनपद लखनऊ के सन्दर्भ में बी0एड0 प्रशिक्षुओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन

ज्योति गुप्ता
शोधार्थी, शिक्षा संकाय
ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ0 चन्दना डे
प्रोफेसर एवं संकायाध्यक्ष, शिक्षा संकाय
ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ

सारांश

इस अध्ययन में जनपद लखनऊ के सन्दर्भ में बी0एड0 प्रशिक्षुओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बी0एड0 प्रशिक्षुओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन कर, छात्र–छात्राओं के लिंग (महिला या पुरूष) के आधार पर बी0एड0 प्रशिक्षुओं के आरक्षण वर्ग (आरक्षित या अनारक्षित) के आधार तथा संस्थान के प्रकार (सरकारी या गैर–सरकारी) के आधार पर संवेगात्मक बुद्धि की तुलना करना है। शोध का समष्टि जनपद लखनऊ में स्थित विश्वविद्यालय व महाविद्यालय में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षु है। आँकड़ो को आनलाइन सर्वेक्षण के माध्यम से एकत्र किए गए। आनलाइन सर्वेक्षण में 210 बी0एड0 प्रशिक्षुओं (145 बी0एड0 छात्राओं तथा 65 बी0एड0 छात्रों) ने प्रतिभाग किया। आँकड़ो की प्राप्ति के लिए उपेन्द्रधर, राज्योत पेठे व अनुकूल एम0 हाइड निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी का उपयोग किया गया। आँकड़ो के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन व टी परीक्षण का उपयोग किया गया है। अध्ययन में 53.71 प्रतिशत बी0एड0 प्रशिक्षुओं की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर औसत पाया गया तथा बी0एड0 प्रशिक्षुओं के लिंग के आधार पर, आरक्षण वर्ग के आधार पर व संस्थान के प्रकार के आधार संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

प्रस्तावना

एक अच्छी बुद्धिलब्धि वाला व्यक्ति उच्च सफलता पा सकता है परन्तु शिखर तक पहुँचने के लिए संवेगात्मक बुद्धि का होना भी आवश्यक है क्योंकि संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति कभी क्रोध या खुशी के अतिरेक में आ कर अनुचित कदम नहीं उठाता है।

संवेगात्मक बुद्धि का प्रत्यय दो शब्दों से बना है संवेग एवं बुद्धि। संवेग शब्द अंग्रेजी के Emotion शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। Emotion शब्द एक लैटिन शब्द है जिसका अर्थ उत्तेजित करना है अर्थात् संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा है तथा बुद्धि का सम्बन्ध व्यक्ति के विवेकपूर्ण चिन्तन की योग्यता से है। इस प्रकार संवेगात्मक बुद्धि का तात्पर्य

शिक्षकों की डिजिटल क्षमता का अध्ययन : साहित्य अवलोकन

[illegible]* एवं प्रो० [illegible]**
*शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ०प्र०)
**प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग, ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ०प्र०)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षकों की डिजिटल क्षमता का अध्ययन : साहित्य अवलोकन किया जा रहा है क्योंकि किसी भी अनुसंधान का सबसे प्रथम व महत्वपूर्ण कार्य सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण है क्योंकि यह शोधार्थी को नवीनतम ज्ञान के शिखर पर ले जाता है, जहाँ उसे अपने क्षेत्र से सम्बन्धित तथ्यों, आँकड़ों एवं परिणामों के मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त होता है तथा यह ज्ञात होता है कि ज्ञान के क्षेत्र में कहाँ रिक्तियाँ हैं, कहाँ विचार्य विरोध है एवं कहाँ अनुसंधान की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण की उपयोगिता एवं महत्व को ध्यान में रखकर पुस्तकों, शोधलेखों, एवं प्रकाशित व अप्रकाशित शोध ग्रन्थों आदि का सूक्ष्म व गहन अध्ययन किया गया है।

संकेत शब्द :– *डिजिटल क्षमता, साहित्य अवलोकन।*

प्रस्तावना :–

21वी सदी के प्रारम्भ में 'जीवनपर्यंत अधिगम हेतु आवश्यक क्षमताएँ' के लिए चर्चा हो रही थी जिसमे सर्वप्रथम 'डिजिटल क्षमता' की अवधारणा परिलक्षित हुई परन्तु यूरोपियन कमीशन एण्ड कौंसिल द्वारा 2006 मे प्रस्तुत सिफारिश 'जीवनपर्यंत अधिगम के लिए मुख्य क्षमताएँ' में डिजिटल क्षमता की अवधारणा अस्तित्व मे आई। डिजिटल क्षमता की अवधारणा में एक व्यक्ति के लिए अपने व्यक्तिगत या व्यावसायिक जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कम्प्यूटर व सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के लिए आवश्यक ज्ञान, समझ व कौशल शामिल है। शिक्षकों की डिजिटल क्षमताएँ अन्य व्यवसायो से जुड़े व्यक्तियों की क्षमताओं से भिन्न होती है क्योंकि शिक्षण में अभ्यास के माध्यम से, ज्ञान व कौशल को बढ़ावा देते हुए एवं सैद्धान्तिक व शैक्षणिक आधारों के अनुरूप डिजिटल संसाधनो व उपकरणो का उचित उपयोग का प्रतिमान स्थापित करना आवश्यक है। **सी0 मानवेल एवं अन्य (2020) ने शिक्षक डिजिटल क्षमता के संदर्भ में कहा है कि "शिक्षकों की वह क्षमता है जो तेजी से बदलती प्रोद्योगिकी का उपयोग विद्यार्थियों को शिक्षित एवं मार्गदर्शित करने के लिए कैसे किया जाए, के योग्य बनाती है ताकि शिक्षा और भविष्य के नागरिकों में तालमेल स्थापित किया जा सके।"** शिक्षण–अधिगम प्रणाली के विकास और विद्यार्थियो के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है कि शिक्षक अपने विषय में निपुण हो, वह शिक्षा के दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक परिपेक्ष्य से परिचिरत हो, उन्हें शिक्षण विधियों–प्रविधियो में सक्षम हो साथ ही साथ प्रोद्यौगिकी व इंटरनेट के दौर में शिक्षकों के लिए डिजिटल क्षम होना भी आवश्यक है क्योंकि डिजिटल समय में डिजिटल क्षमता के अभाव में शिक्षक प्रभावी ढग से अपने कार्यो को करने में असमर्थ है। ऐसे मे यह जानने की आवश्यकता है कि शिक्षकों की डिजिटल क्षमता को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक कौन से है? अतः प्रस्तुत अध्ययन में **शिक्षकों की डिजिटल क्षमता का अध्ययन : साहित्य अवलोकन** किया जा रहा है।

साहित्य अवलोकन :–

International Journal of Multidisciplinary Educational Research
ISSN:2277-7881; Impact Factor :7.816(2021); IC Value:5.16; ISI Value:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:8(1), August 2021
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication: http://ijmer.in/pdf/e-certificate%20of%20publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 4th August
Publication Date: 30th August 2021
paper.ijmer.in.doi./2021/10.08.17

शिक्षण प्रभावशीलता एवं संवेगात्मक बुद्धि से संबंध : साहित्य अवलोकन

ज्योति शुक्ल, प्रो० सफ़ल सक्सेना
शोधार्थी, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
शिक्षाशास्त्र विभाग
ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षण प्रभावशीलता एवं संवेगात्मक बुद्धि से संबंध साहित्य अवलोकन किया जा रहा है क्योंकि किसी भी अनुसंधान का सबसे प्रथम व महत्वपूर्ण कार्य सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण है क्योंकि यह शोधार्थी को नवीनतम ज्ञान की शिखर पर ले जाता है, जहाँ उसे अपने क्षेत्र से सम्बन्धित तथ्यों, आंकड़ों एवं परिणामों के मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त होता है तथा यह ज्ञात होता है कि ज्ञान के क्षेत्र में कहाँ रिक्तियाँ हैं, कहाँ विचारों विरोध है एवं कहाँ अनुसंधान की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण की उपयोगिता एवं महत्व को ध्यान में रखकर पुस्तकों, पत्रिकाओं एवं प्रकाशित व अप्रकाशित शोध सामग्री आदि का सूक्ष्म व गहन अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द: शिक्षण प्रभावशीलता, संवेगात्मक बुद्धि

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य-जीवन के परिष्कार एवं विकास की प्रक्रिया है। शिक्षा मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों का सर्वांगीण विकास अर्थात् शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का विकास है। शिक्षा का सम्बन्ध जितना व्यक्ति से है, उससे अधिक समाज से है। मनुष्य जीवन में जो भी अर्जित करता है वह शिक्षा का ही परिणाम है। व्यक्ति का चरित्र, व्यक्तित्व, संस्कृति, चिन्तन, सूझ बूझ, कुशलता, आदतें तथा जीवन की छोटी से छोटी बातें शिक्षा पर निर्भर है। वास्तव में शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव-शिशु विकसित होकर समाज में उपयुक्त स्थान ग्रहण करता है। शिक्षा के माध्यम से सहस्त्रों वर्षों से समाज द्वारा अर्जित अनुभव बालक को हस्तान्तरित किए जाते हैं। शिक्षा के माध्यम से ही बालक का शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास होता है। शिक्षा के द्वारा ही उसके चरित्र का निर्माण होता है, उसका समाजीकरण होता है और वह मनुष्य की संज्ञा पाने योग्य बनता है।

शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए समाज विद्यालयों का संगठन करता है। विद्यालय की संकल्पना में विद्यालय भवन, पाठ्यवस्तु, पाठ्य-सहगामी क्रियाएँ, पाठ्यपुस्तकें आदि सभी वस्तुएँ शैक्षिक कार्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, परन्तु जब तक इन्हें प्रभावी शिक्षकों द्वारा जीवन-प्रतिस्पदान नहीं की जाएगी, तबतक ये निरर्थक ही रहेंगी। शिक्षक के व्यक्तित्व एवं कार्य-कुशलता का सबसे अधिक प्रभाव विद्यार्थियों के मानस पटल पर पड़ता है। वे विद्यार्थी ही भविष्य के निर्माता होते हैं। यदि यह कहा जाए कि किसी भी राष्ट्र के निर्माण में अध्यापकों का योगदान प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से होता है तो यह कहना मिथ्या नहीं होगा। प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री जॉन एडम्स व जॉन डीवी शिक्षक को शिक्षा प्रक्रिया का अभिन्न अंग मानते हैं क्योंकि शिक्षक ही विद्यार्थियों अधिगम के लिए प्रेरित करता है और वांछित लक्ष्य की ओर अग्रसर करते हैं। शिक्षा की प्रक्रिया एक अन्तर्वैयक्तिक प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी एवं शिक्षक के मध्य अन्तःक्रिया होती है। इस अन्तःक्रिया के दौरान दोनों के न केवल बौद्धिक गुण अपितु संवेगात्मक व्यवहार भी एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। ऐसे में यह जानने की आवश्यकता है कि शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं संवेगात्मक बुद्धि के मध्य क्या सम्बन्ध है? प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षण प्रभावशीलता एवं संवेगात्मक बुद्धि से संबंध साहित्य अवलोकन किया जा रहा है।

साहित्य अवलोकन

वर्मा, पूजा ने 2020 में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कृत्य संतुष्टि व शिक्षण प्रभावशीलता का उनकी संवेगात्मक बुद्धि के सम्बन्ध में अध्ययन किया। शोध समस्या का समाधान के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। प्रतिदर्श के रूप में उत्तर प्रदेश की बस्ती जिले में स्थित माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत 300 शिक्षकों का चयन किया गया। अध्ययन में पाया गया कि– 1. 23 प्रतिशत माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का स्तर उच्च, 60 प्रतिशत माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का स्तर सामान्य व 17 प्रतिशत माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का स्तर निम्न पाया गया। माध्यमिक विद्यालय के पुरुष शिक्षक व महिला शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता के स्तर में अन्तर है। पुरुष शिक्षक, महिला शिक्षकों की तुलना कम प्रभावी पाए गए। 2. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर सामान्य पाया गया तथा माध्यमिक विद्यालय के पुरुष शिक्षक व महिला शिक्षक की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में अन्तर नहीं है। 3. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि व शिक्षण

शोध नैतिकता का आधार : भारतीय दर्शन, धर्म एवं संस्कृति

डॉ चंदना डे
असोसिएट प्रोफेसर एवं सकायाध्यक्ष, शिक्षा संकाय
ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय,
लखनऊ

ज्योति गुप्ता
शोधार्थी, शिक्षा संकाय
ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय,
लखनऊ

सारांश
शोध नैतिकता का आशय अनुसंधान संस्थानो द्वारा बताए गए उन नियमों, सिद्धान्तों एवं आचरण के समूह से है जो कि शोध कार्य की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। शोध नैतिकता सहयोगात्मक कार्यो के लिए आवश्यक मूल्यो का समर्थन करते है तथा शोधकर्ता और समाज के मध्य सहयोग को बढ़ाने में सहायक है। शोध नैतिकता का प्रत्यक्ष सम्बन्ध शोधकर्ता और समाज के हितो से है। आज सम्पूर्ण विश्व शोध नैतिकता की बात कर रहा है परन्तु विभिन्न अनुसंधान संस्थानो द्वारा बताए गए नैतिक आचरणों का मूल क्या है? शोध नैतिकता का आधार क्या है? शोध के नैतिक सिद्धान्त कैसे सुनिश्चित किए गए है? इन सभी प्रश्नो का उत्तर भारतीय दर्शन, धर्म एवं संस्कृति में परिलक्षित है। प्रस्तुत शोध में शोध नैतिकता के लिए दिशा–निर्देशो का आधार भारतीय दर्शन, धर्म एवं संस्कृति में होने के सम्बन्ध में अध्ययन किया गया है। यह एक अनुभवजन्य अनुसंधान है।

मुख्य शब्द : शोध नैतिकता, सामाजिक मूल्य, नैतिक मूल्य भारतीय दर्शन, धर्म एवं संस्कृति

प्रस्तावना

जीवन–मूल्य, मानवीय आचरण एवं व्यवहारों का मापदण्ड है। इनका आधार मानवीय अनुभव, सामाजिक परम्पराएँ और विभिन्न संस्कृतियाँ होती है। जीवन–मूल्य में नियमन एवं विकास के अनेक धार्मिक एवं दार्शनिक सिद्धान्तों का योगदान होता है। आधुनिक युग में मुल्यों की अवधारणा में परिवर्तन आया है। आधुनिक मूल्यो पर आधुनिकता, भौतिकता, अन्धानुकरण, अनीश्वरवादी पवृत्ति, तर्क–प्रधान चिंतन एवं वैज्ञानिक प्रवृत्ति का प्रभाव पड़ा है। आज के बदलते परिवेश में मूल्यों का निरंतर ह्रास होता जा रहा है जिसका प्रभाव मानव समाज पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ रहा है। डॉ0 मुखर्जी का मत है कि "कोई समाज यदि अपने अस्तिव को बनाए रखना चाहता है तो उसे व्यक्तित्व के सर्वोच्च मूल्यों की नेयमित रूप से पूर्ति करनी चाहिए। मानव समाज व मानव–कल्याण के लिए मूल्यों का पालन एवं संरक्षण आवश्यक है।" समाज को प्रगति की राह में शोध का विशेष महत्त्व है। शोध का क्षेत्र भी नैतिक मूल्यों में निरंतर गिरावट से प्रभावित हुआ है। शोध निष्कर्षो एवं परिणामों का प्रत्यक्ष प्रभाव समाज पर पड़ता है इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि शोध में नैतिकता का पालन किया जाए। शोध के लिए निर्देशित नियम को ही शोध–नैतिकता कहा जाता है। शोध–नैतिकता के सन्दर्भ में American Psychological Association.